‘मातादीन लोधी’

सन 1857 की क्रांति से पहले एक शहीद स्वतंत्रता सेनानी थे ‘मातादीन लोधी’ जिनका जन्म तेलीवाड़ा मोहल्ला, पुरानी दिल्ली में लोधी राजपूत परिवार में हुआ था। मातादीन लोधी ने झंडा-गीत को एक प्रेस में छपवाकर दिल्ली और आसपास के इलाकों में बँटवा दिया था। यह क्रांतिकारी झंडा गीत वह था जिसको छपवाने पर अंग्रेजों ने रोक लगा रखी थी। अंग्रेजों ने उस अखबार की प्रतियाँ ढूँढ़-ढूँढ़ कर फाड़ दी थी या जला दी थी, साथ में यह भी कहा गया था कि जो भी इस झंडा गीत को अपने पास रखेगा या जिसके यहाँ पाया जाएगा उसे मृत्युदंड दिया जाएगा और इस तरह से मातादीन लोधा को पकड़ने के लिए 500 रूपये का इनाम भी अंग्रेजों ने घोषित किया और जगह-जगह छापे मारते रहते थे, तलाशी करते थे। एक रात को हलकी बारिश हो रही थी और रात के करीब 3:00 बजे थे, चारों तरफ सन्नाटा था ऐसे में किसी मुखबिर ने खबर दी कि मातादीन अपने घर में आए हुए हैं। अंग्रेजों ने तेलीवाड़ा में, जहाँ उनका मकान है, क्षेत्र को घेर लिया और घेरने के बाद में धीरे-धीरे उनके मकान की तरफ बढ़ने लगे जैसे ही मकान के अंदर घुसे उनको अंग्रेजों के घुसने की आहट हुई और उन्होंने आनन-फानन में गोलियाँ चलानी शुरू कर दी। अंग्रेजी लोग भागते रहे और वो उनके पीछे। उन्होंने देखा कि काफी सेना है इसके बाद भी वो सामना करते रहे। उनकी सारी गोलियाँ खत्म हो गई तो उन्होंने तलवार निकाली और तलवार से बहुत सारे सैनिकों को जख्मी करते हुए इधर-उधर भागते हुए एक मुसलमान भाई के यहाँ शरण ली और उसके बाद काफी खोजबीन के बाद में सैनिकों को वो नहीं मिले। वहीं-कहीं छुप करके वह अपना काम करने लगे। इस तरह से मातादीन लोधी धीरे-धीरे करके इस अज्ञातवास को काटते रहे । समय बदला जब 1857 की क्रांति का विद्रोह शुरू हुआ। मेरठ, आगरा, दिल्ली सभी प्रदेशों से आजादी की आग भड़कने लगी। तब उनके अंदर फिर से मन में चिंगारी ज्वाला बन गई और यह ज्वाला आजादी के दीवाने के रूप में कानपुर, झांसी, मेरठ, लखनऊ से होती दिल्ली पहुंच रही थी। दिल्ली में फिर एक बार मातादीन लोधी का आमना-सामना अंग्रेजी सेना से हुआ और विद्रोहियों तथा अंग्रेजी सेना आमने सामने लडती रही काफी समय तक युद्ध होता रहा। करीब तीन-चार दिन तक रुक-रूक कर मातादीन और उसके

विद्रोहियों से युद्ध चल रहा था। आखिर उनको घेर लिया गया, उनके कुछ साथी बचकर निकल गए लेकिन मातादीन और उनका एक साथी गोली लगने से घायल होकर गिर पड़े उनको अस्पताल ले जाया गया और वहाँ जब वो ठीक हो गए उनपर मुकदमा चला और फांसी की सजा सुनाई गई। अंग्रेज द्वारा फांसी पर चढ़ाते समय उनसे आखिरी इच्छा पूछी गई। मातादीन लोधी ने मरते समय भी सिर्फ एक ही बात कही थी कि आप मेरा देश छोड़कर चले जाओ मेरी यही आखिरी इच्छा है। उनकी बात सुनकर अंग्रेजी अफसर हंसे और इससे बाद वो फांसी के फंदे पर चढ गए। देश पर कुर्बान होने वाले शहीद मातादीन लोधी पर समाज को गर्व है। उनकी याद में उनके नाम से एक सरकारी स्कूल व पॉलिटेक्निक कालेज सब्जी मंडी आर्यपुरा दिल्ली में है जिसमें बच्चे शिक्षा लेकर अपना भविष्य बना रहे हैं।